

पोवारी बाल ई मासिक

झुंझुरका

जानेवारी 2023

साल- २ रो , अंक २०वो

REPUBLIC DAY

पोवारी बाल बाचक चळवळ प्रस्तुत

संपादकीय.......

झुंझुरकाका सब बाचक, साहित्यिक अना हितचिंतक, सबला नवो सालकी हार्दिक शुभकामना!

नवो साल नवो उत्साह लेयस्यान आवंसे. येनं सालमा तुमी नवा संकल्प करस्यान उनला पूरा करनको पूरो प्रयास करो. जेव सतत प्रयास करत रवसे, जीवनमा वोकी प्रगती होसे.

२०२३ सालमा झुंझुरका तुमला पोवारी बाचन, लिखन अना बोलनला प्रेरीत करे. पोवारी मायबोलीकी गोडी तुमचा चखावनको काम करे. पोवारीका बालसाहित्यिक तुमला रोज नवो अनुभव देनको प्रयास करेती. तुमला पोवारी कथा, कविता, लेख, प्रश्नमंजुषा, चित्रकथा पसंद आवत रहेतच.

नवो सालमा तुमी पोवारी साहित्यको मनभर आस्वाद लेव. तुमरंजवर काही कल्पना रहेत. तुमला काही लिखूसा लगत रहे त् वोला कागजपर लिखस्यान आमला धाळो. प्रकाशनयोग्य साहित्य प्रकाशित करनोमा आये. तुमला लिखान करनला काही मार्गदर्शनकी जरूरत रहेतं, वाबी सहायता तुमला मिले.

येन् मयनामा तिन रंगको उत्सव.....मंजे आपलो प्रजासत्ताक दिन साजरो होय रही से. विविधता मा एकता आपलो देशकी ताकद आय. येला कायम ठेयस्यान राष्ट्रहितमा आपण सब कार्यरत रवनकी प्रतिज्ञा लेबी.....जय हिंद - जय भारत.

- गुलाब बिसेन

संपादक - झुंझुरका पोवारी बाल ई मासिक

मो. नं. 9404235191

चित्रकथा ४

✍ गुलाब बिसेन

दिवसबुडता की बेरा होती. विशाखा करत होती. घरका सबजन खेतमाच होता. अचानक को भुकनको आवाज आयेव. जरासी दचकी. तसीच उठी अना क् आवाजकन परात गयी. कोठामा जोरजोरलक भुकत होतो. नं न्याहारस्यान देखिस. तनिसक् बेठमा मोठो

गुंडरी मारस्यान बसेतो. वोन् सर्पमित्र शामलाल काकाला बुलाईस. सरपन् खायीतीस. घळीभरमा सर्पमित्रन् ला धरस्यान लिजाईस. कं चतुराईलक सामनेको अनर्थ टलेवलक अजीन् वोला शाब्बासकी देईस.

तरा मा

पानी आटेव परामा

मसरी गयी तरा मा

धार आटी झरा की

गिल्ली माटी तरा की

होतो खाल्या फतरा को

डवला पानी खतरा को

पाला चुला हतऱ्याता

चिखललका भऱ्याता

मसरी सोवन डरायी

पानाखाल्या परायी

बगल को डोभरामा

भेपकाइन को डरामा



डराव डुक को तराना

मसरी लायी गऱ्हाना

आयकक्यारी जरासी

मसरी भलताच तरासी

खोकला आयेव करारो

करीस नोन को गरारो

बरसेव पानी सरासर

संगर गयेव ताराभर

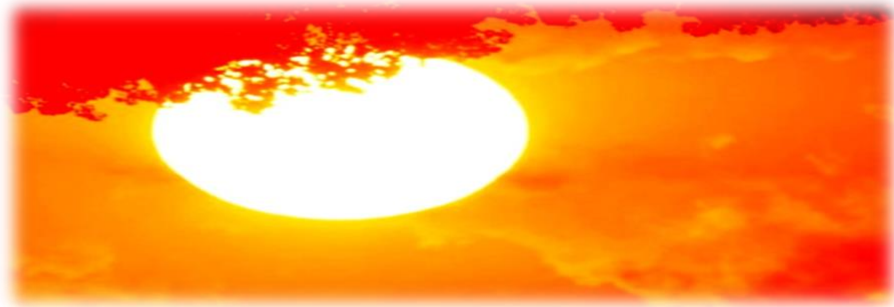
भेपका सप्पा डरान्या

चिरकत मुंडा परान्या

डॉ प्रल्हाद हरिणखेडे "प्रहरी"

नवी मुंबई

पूस को महिना



पूस को महिनामा थंडी करसे परेशान,
रजई ओढकर चुपचाप सोवसे इन्सान.

दिवस रव्हसेती लहान रात रव्हसे मोठी,
थंडी भगावन गावमा पेटावसेत सेकोटी.

सकारी बिस्तरल् उठन की नही होय इच्छा,
दस बजेवोरी थंडी करसे सब को पिच्छा.

सुटर, कोट, गरम कपडा की पडसे जरूरत,
थंडीक् कारण बाहेर जानकी नही होय हिम्मत.

आंग धोवनला लगसे जास्त गरम पानी,
आंग धोवनला टुरू पोटू करसेत आनाकानी.

पांड अना संक्रांत आवसेत पूस महिनामा,
गुंजा ना तीर का लाडू बनसेत हर घरमा.

कब बितसे येव महिना असो लगसे सबला,
थंडील् परेशान होसेती बच्चा, बुढ्ढा, अबला.

अंग्रेजी नवो साल बी आवसे पूस महिनामा,
वातावरण लपटेव रव्हसे धुंधक् कोहरामा.

श्री चिरंजीव बिसेन गोंदिया

गंमत 'र' की

देवनागरी लिपी मा 'र' येव एकमेव असो अक्षर से की वोला उकार देन को घनी अन्य अक्षर सारखो खाल्या देयकन चलं नही, तं 'पोट' मा देनो लगं से. (जसो - रु, रू)

येनं 'र' का जोडाक्षर मा आवनेवाला विविध रूप हे वोको अणखीनच एक वैशिष्ट्य! से. जोडाक्षर मा शब्दसंग मा बदलने वाला 'र' का रूप विलक्षणच कव्हनो पड़े.

उदाहरणार्थ -

१) सूर्य, वर्धन, वर्ग, मर्म, कर्म. ('र' को रूपांतर रफार मा)

२) वऱ्या, पऱ्हा, ऱ्हास, माऱ्या, नाऱ्या, तऱ्हा.

३) अग्र, क्रम, नम्र, तीव्र.

४) त्रास, त्रिलोक, संत्रा, जत्रा. (खरो म्हणजे येनं शब्द मा को 'र' को रूप वऱ्या को क्रमांक ३ सारखोच से, पर येनं 'त्र' मा को 'र' न 'त' ला बी यहाँ थोड़ो अलगच अवतार लेनला लगायीस.)

५) राष्ट्र, पौंड्र, (इंग्रजी मा का काही शब्द - ट्रक, ड्रम, ड्रॅक्युला, ड्रेनेज, ट्रेन, ट्रायल) ('र' को येनच रूपला रुकार कसेत का?...नही, पर लगं से असोच.)

६) 'र' पायमोड्या (हलंत) रूप मा जास्त दिसं नही. पर जबं कबं वू तसो दिसं से तबं आंगपर 'सर् र् र्कन' काटा उभा होसेती. (मोरो कीबोर्डपर 'र्' की द्विरुक्ती सलग करता नही आयेव लक एक एक 'स्पेस' सोड़नो पड़ी से.)

'र' का येनं विविध मनोहारी रूप मा काहीजण 'सृजन, दृष्टी, कृष्ण' अशी भर टाकंसेत. पर या 'र' की करामत नोहोय, 'ॠ' की करामत आय. 'रू' अना 'ॠ' को उच्चार-साधर्म्य येव वोको प्रमुख कारण रहये का?

(बालभारती परिवार फेसबुक पेजपर लक मराठी मा लिखी अरुण सौदागर की मुल रचना)

पोवारी अनुवाद - इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'

मो. नं. ९४२२८३२९४१

मन की महिमा

मन की महिमा से अपरम्पार,

गति अन शक्ति से येकी अपार।

राखबी सब मन मा निर्मलता,

जीवनपथ मा मिल्हे सफलता ।।१।।

मनमा राखो सब यव आशा,

पुरी होहे हर अभिलाषा।

बस मा रहे ज़ब आमरो मन,

सफल होय जाहे यव जीवन।।२।।

मन विचार को मोठो गंगार,

शरीर करसे येको श्रंगार।

सागर की लहर जसो से मन,

चलावसे यव हमरो जीवन।।३।।



मनमा से सतरंगी बिचार,

देवसे मानव ला आचार।

मनकी गती होवसे अथाह,

धरो थांबकन च येकी राह।।४।।

नियममा राखो मन की शक्ति,

करखन सब भगवान की भक्ति।

भेट सिकसे गलत लक़ मुक्ति,

मानकन सबझन यवच युक्ति।।५।।

- ✍श्री ऋषि बिसेन

खेती बाडी

.

भसी बसीसेत डोबरामा,
भेबा बोंबलेव खोदरामा.

चिकनी माती तरा की,
कानुबाला बसावन की.

बांधीमा को चिखल,
टोंघरा टोंगरा खपन.

प-हा लगावनकी खार,
भुडकाक् पानीकी धार.

पेंडी फेको झोट झोट,
खाली होसे भरेव पोट.

नांगर चलसे आरी आरी,
काम करसेत आरी पारी.



बाई लोकको प-हाकी पाथ,
प-हा लगावसेत गात गात.

बैलला लगावसेत मुस्का,
आमरो नांग-या होतो ठुस्का.

पानमा टाकसेत सुपारी,
नांगर हकालनकी तुतारी.

नांगर जुपनको जोता
धानल् भरसेत पोता.

बैल ईनको लंबो कासरा,
नांगर हकालनको आसरा.

नांगर जुपनकी बारती,
दिवस बुळता होसे आरती.

श्री चिरंजीव बिसेन

अभंग वाणी

****

लेगा लेगा हरी नाव /जगे मन भक्तिभाव//

मन इंद्रियाको राजा /ओकीच करून पूजा//

ठायी ठायी फिर मन /फिर सारो त्रिभुवन //

मन फिर रानोरान / तरी नही समाधान //१//



दस इंद्रिय को ठान / वऱ्या मनको आसन//

जेको मन हात नहीं/ओंज्या गुरू कर काही//

पयले मनला मुंडो / ना मंगच ब्रह्म धुंडो//

मन मारो मैदा करो /चरण गुरूका धरो //२//

पाच तत्वकी या काया/पृथ्वी,आकाश समाया//

अग्नि,पाणी अना वारा/ जैको सब जाग थारा//

सोळा सांधा लग्या जोळ/कोठुळी गा बाहात्तर//

दरवाजा सेती नव /दसवी खिडकी भाव//३//

सप्त सागर को घेरा / वर सत्रावी को फेरा//

ओकी उल्टी बहे धारा /जसो अमृत को झरा //

वाच गा जिवन कला / जीवजंतू कोभी ठेला//

संत मुनी आंग धोव/जेंज्या सुधबुध खोव //४//

शुध्द आचार बिचार / होय भवधारा पार//

सब जिव ब्रम्हरूप /जानो वु आत्म स्वरूप//

सब दया माया जाणो /देव उनक मा मानो//

वाच जाणोआत्मभुती/जैकी सबठाई बस्ती//५//

ह.भ.प. श्री डी.पी.राहांगडाले

गोंदिया

चिमणी का पिल्ला

सुंदर गोजीरा
चिमणी का पिल्ला
दिससेत साजरा
दुही चिमुकला

नाजूक पिवरी चोच
लहान दुय डोरा
इवलासा पंख
राखडी तपकिरा

बस्यासेत फांदीपर
दुहीजन संगमा
पाणी पिवनकी
तृष्णा जगी मनमा



टपकती बुंद
कशी आये चोचमा
नादान पिल्ला
पड गया सोचमा

युक्तीलक पियके पाणी
भया समाधानी
जल जीवन बचाओ
करन बस्या बयानी

घरटा मा जायके
करसेत चिवचिवाट
माय चारो आणे मुन
देखन बस्या बाट

सौ शारदा चौधरी भंडारा

झाड उपयोगी.....



समय की से या फुकार

झाड लगाओ सबजन

सुंदर दिसे हिरवो बन

बढिया मिले ऑक्सिजन.

झाड कटाई रोक कर

करबी ओको संगोपन

मिले छाया झाड की मस्त

खूश होये सबको मन.

झाड अन बेला शोभेत

घर की शोभा बढायेत

फल फुलं मस्त देयेत

शुद्ध परिसर ठेयेत.

निर्धार करबीन आता

हर आदमी झाड एक

धूप बचावन जागा की

कार्य करबी असो नेक.

श्री उमेन्द्र युवराज बिसेन (प्रेरित)

रामाटोला

जीवन की शाळा



जीवन कि स्कूल शिकावसे
सही अनुभव को शिक्षण।
धडा देसे कठनाईनमा
करनला खुद को रक्षण।।

जीवन को स्कूल मा शिकसे
अभ्यासक्रम अनुभव को।
अनुभव को आधार पर
गणित जुडसे जीवन को।।

जीवन को स्कूल मा मिलसे
अच्छों गलत कि समज।
जीवन व्यतीत करनला
याच रव्हसे सही गरज।।

सुखी जीवन बनावनला
जीवन कि स्कूल से प्रबल।
सही राह भयात मार्गस्थ
जीवन होये सही सफल।।

====================

उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरीत)

रामाटोला गोंदिया (श्रीक्षेत्र देहू पुणे) ९६७३९६५३११

लाडू मुरा का

मुरा अना भेलि(गूळ)

पक्का सेती दोस्त

उनको यारी की चर्चा

संकरातमा होसे मस्त



एकमेकला भेटणं साती

भेलीं सिजसे खदखद

दोस्तला भेटनसाती

आचपरभी होसे गदगद

कुरकुरो होनसाती मुरा

इत गरम तपन खासे

संगी ला भेटणं साती

जसो तपच करसे

आवसे कृष्ण सुदामा

मिलाप की मधुर बेला

मुरा जायके भेटसे

भेली को पाकला

भेली बिचारी रोवसे

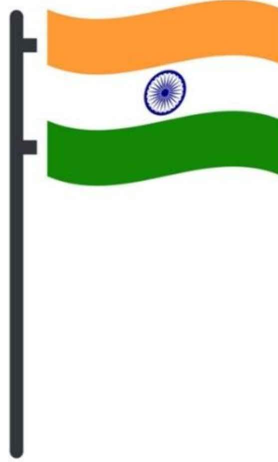
रंग रूप निहारसे

पर संगि ला भेटके

यातना सब भूल जासे

सौ छाया सुरेंद्र पारधी

तिरंगा



आमरो भारत देश को

झंडा आय तिरंगा

आब यहान नहाती

अत्याचारी फिरंगा ||१||

त्याग की कहानी

वर्याको सेंदरी रंग

मैदानबी सांगसे

शूर पराक्रम की जंग ||२||

बीच को पांडरो रंग

शांतीको सूचक

सत्य अहिंसा ल्

जीवन भयेव बेझिजक ||३||

खालत्या को हिवरो रंग

समृद्धीकी झलक

कारी माटी संगमा

निसर्ग से फलक ||४||

"अशोक "नामक नीरो

चोबीस आराको चक्र

देशपरा दुश्मन की

नजर नही पड् वक्र ||५||

असो येव तिरंगा

स्वतंत्रता को प्रतिक

समता न् बंधुताको

बनीसे ससतीक ||६||

सौ वंदना कटरे "राम-कमल "

गोंदिया

बलिदान



त्याग सेवालक भेटेव स्वातंत्र्य
फुलेव शांतीलक विकास
बलिदानलकाच चांगलादिवस
से विश्वगुरुकि आस।।

अमृतमहोत्सव स्वातंत्र्यको
भयोव आब् साजरो
आद आवसे सैनिकयकि
करीन त्याग केतरो।।

प्राचीन से आमरी संस्कृती
बोलीधन से धरोहर
समजोता नयि यन् बातपर
संस्कृती बसी से ज्ञानपर।।

बलिदान आबबी से जरुरी
सभ्यता टिकावनसाटी
संस्कृतीलकच ज्ञान शोभसे
जरुरी से ज्ञानक् रक्षणसाटी।।

देस मोरो देव से
जुनो धरो शोधो नवो
असो करो रसायन ताजो
दुनिया कये होवो होवो!!।।

श्री पालिकचंद बिसने, सिंदीपार(लाखनी)

🌷ऋतू बसंतकी शान🌷

(वर्ण संख्या - १६, यती - ८)

येनं भारत देशमा, सय ऋतूमा महान |
झलकसे धरापर, ऋतू बसंतकी शान ||धृ||

दिसं मोवरी खेतमा, सुरू भयेव बसंत |
होय रहीसे थंडीको, आता धिरुधिरु अंत ||
दिसं धरती पिवरी, शिवारमा आयी जान |
झलकसे धरापर, ऋतू बसंतकी शान ||१||

खिली उंबई गहूकी, बार आंबाला आवसे |
बगिचामा कोयार बी, कूहू कूहूके गावसे ||
बड़ी मोहक फिपोली, उड़ासेती रहुऱ्यान |
झलकसे धरापर, ऋतू बसंतकी शान ||२||

खेल देखो बादरमा, रंग बिरंगी रंगको |
दिसं सुंदर केतरो, वऱ्या मस्त पतंगको ||
वऱ्या सुर्यको तेजलं, चमकसे आसमान |
झलकसे धरापर, ऋतू बसंतकी शान ||३||



गोड़ी रव्हसे हवामा, सुरू होसे पानझड़ी |
हर अंतको बादमा, नवी उकलसे कड़ी ||
सांग नवी सुरुवात, नवो पालवीको पान |
झलकसे धरापर, ऋतू बसंतकी शान ||४||

चोला बसंती पेहर, नारी दिससे सुंदर |
बसंतको पंचमीला, सृष्टी खिली मनोहर ||`
होसे सरस्वती पुजा, अज सब मिलशान |
झलकसे धरापर, ऋतू बसंतकी शान ||५||

राजा भोजकी जयंती, हर गावमा मनावो |
पोवारीको स्वाभिमान, हर मनमा जगावो ||
होय रहीसे जागर, आता उचलो कमान |
झलकसे धरापर, ऋतू बसंतकी शान ||६||

© इंजी. गोवर्धन बिसेन "गोकुल"
गोंदिया, मो. ९४२२८३२९४१

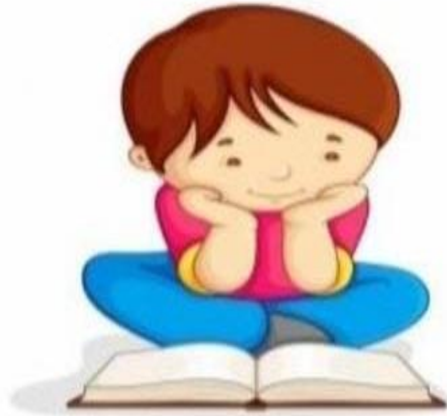
रंग भरो



बोलो पोवारी



बाचो पोवारी



लिखो पोवारी

